प्रातःक्लास 24.2.68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद हैं?

ओमशांति। मीठे2 रुहानी बच्चे अभी शिव जयंती मना रहे हैं और भारत में ही शिवजयंती मनाते हैं। जयंती एक ही की मनाई जाती है। उसको अगर सर्वव्यापी कह देते हैं , अब सर्व की जयंती तो हो न सके। जयंती एक की ही मनाई जाती है। जयंती कब मनाई जाती है जब गर्भ से बाहर जाते हैं। जयती मनाते जरूर हैं। आर्यसमाजी भी मनाते हैं। अभी तुम जानते हो 32वीं जयंती। गोया 32वां वर्ष हुआ जयंती को। जन्म दिन तो सभी को याद रहता है। फलाने दिन यह गर्भ से बाहर निकला। अभी उनकी तुम 32वीं जयंती मनाते हो। वह तो है निराकार। उनकी कैसे जयंती हो सकती है?वह तो आत्मा जाकर शरीर में प्रवेश करती है तब ही जयंती मनाई जाती है। इतने बड़े2 मनुष्यों के निमंत्रण कार्ड आदि जाते हैं। कोई को पूछना तो चाहिए ना जयंती कैसे मनाते हैं। उसने जन्म कब, कैसे लिया? फिर उनके शरीर का नाम क्या रखा? इतने पत्थर बुद्धि हैं जो कब पूछते भी नहीं हैं। समझने के लिए पूछना तो चाहिए ना। उनको कहा जाता पत्थर बुद्धि। शिवजयंती मनाते हैं ;परंतु उनसे कोई पूछते नहीं। वह तो है निराकार। उनका नाम ही है शिव। तुम सालीग्राम बच्चे हो। जानते हो इस शरीर में शालीग्राम है। नाम तो शरीर का ही पड़ता है। वह तो है परमात्मा शिव। अभी तुम कितना धूमधाम से प्रोग्राम रखते हो। दिन प्रतिदिन तुम धूमधाम से समझाते रहते हो। शिवबाबा की ऐसे प्रवेशता होती है। वह जयंती ही गाई जाती है। उनकी तिथी–तारीख कोई होती नहीं। भल कहते हैं मैं साधारण रूप में प्रवेश करता हूं। कब ,किस घड़ी वह नहीं बताते हैं। तिथी–तारीख दिन आदि नहीं बताते हैं जो कहे कि फलाना तारीख। जैसे वरसी मनाते हैं ,बस। तिथी–तारीख होती नहीं। जन्मपत्री आदि होती नहीं। नही तो जन्मपत्री इनकी सबसे उंच है। कहते भी हैं हे प्रभु तेरी महिमा अपरमअपार है। तो जरूर कुछ करते होंगे ना। महिमा बहुतों की गाई जाती है। नेहरू, गांधी की भी महिमा गाते हैं। उनकी महिमा कोई भी बता न सके। तुम ही समझते हो वह (ज्ञान) का सागर है। ..... वह तो एक ठहरा ना। उनको सर्वव्यापी कैसे ....कह सके? पत्थर बुद्धि इतने बन गए हैं जो समझते ही नहीं और तुम मनाते हो तो कोई को पूछने का भी साहस नहीं रखते हैं। नहीं तो पूछना चाहिए ना। शिवजयंती गाई जाती है। महिमा की जाती है। जरूर होकर गए हैं। बहुत भक्त लोग हैं। गवर्मेंट भी भक्तों के स्टैम्प्स बनाती है। अगर धर्म को न मानते तो साधुओं, भक्तों आदि के स्टैम्प्स क्यों नहीं बनाते? जैसी है गवर्मेंट वैसी है रईयत। अभी तुम बच्चों को बाप के बायोग्राफी अच्छी तरह से मालूम है। तुमको जितना खबर रहता है उतना और कोई को नहीं रहता। तुम ही कहते हो शिवजयंती हीरे तुल्य जयंती है। बाकी सभी जयंतियां कौड़ी मिसल है। समझो कृष्ण जयंती मनाते हैं इस समय उनको तुम कौड़ी तुल्य समझते हो। बाप ही आकर कौड़ी तुल्य से हीरे तुल्य बनाते हैं। श्रीकृष्ण बाप द्वारा इतना उंच बना। इसलिए उनका जन्म हीरे तुल्य गाया जाता है। पहले जरूर कौड़ी तुल्य होगा। फिर बाप हीरे तुल्य बनाया। यह सब बातें मनुष्य नहीं जानते हैं। उनको ऐसा वर्ल्ड प्रिंस किसने बनाया? तो यह ..... चाहिए ना। कृष्ण जन्माष्टमी मनाते हैं। बच्चा तो माता के गर्भ से ही निकला। फिर दिखाते हैं .....में ले जाते हैं। अब कृष्ण तो वर्ल्ड का प्रिंस। उनको फिर डर काहे का? वहां फिर कंस आदि कहां से आये? यह सब बातें शास्त्रों में लिख दी है। अभी तुमको अच्छी रीत समझाना चाहिए। समझाने की युक्तियां बड़ी अच्छी चाहिए। सभी एक जैसे नहीं पढ़ा सकते हैं। युक्ति .....न समझाने से और ही डिससर्विस हो जाती है। अभी शिवजयंती मनाई जाती है तो जरूर वही वर्णन करे ना। गांधी जयंती पर गांधी की ही महिमा करेंगे। और सूझेगा नहीं। अभी शिवजयंती मनाते हैं उसकी महिमा क्या है?उनकी भी बायोग्राफी जीवन चरित्र होगा ना। तुम उस दिन उनका ही जीवन चरित्र बैठ सुनाओ। जैसे कि बाप समझाते हैं। मनुष्य कोई.....नहीं है। शिवजयंती कैसे शुरू हुई इसका कुछ .....वर्णन नहीं है। महिमा तो अपरमअपार गाई जाती है। शिवबाबा को भोलानाथ कह बहुत महिमा करते हैं। वह तो भोला भंडारी शिव–शंकर कह देते हैं।

शिवबाबा को भोलानाथ कह बहुत महिमा करते हैं। वह तो भोला–भंडारी शिव–शंकर कह देते हैं। शंकर को भोलानाथ समझ लेते हैं। वास्तव में भोलानाथ शंकर तो लगता नहीं। उनके लिए तो कह देते आंख खोलने से विनाश कर देते। धतूरा खाते हैं आदि2। उनको फिर भोलानाथ कैसे कहेंगे? महिमा तो एक की ही होती है ना। तुमको शिव के मंदिर में जाय समझाना चाहिए ना। वहां तो बहुत भक्त लोग आते हैं। तो शिव का जीवन चरित्र सुनाना है। कहते हैं भोला–भंडारी शिवबाबा। अभी शिव और शंकर का भेद तो तुमने बताया है। शिव आदि की पूजा होती ही है शिव के मंदिर में। तो वहां जाकर समझाना चाहिए हम आपको शिव की जीवन कहानी बताते हैं। लिखना भी चाहिए हम परमपिता परमात्मा शिव की जीवन कहानी सुनावेंगे। जीवन कहानी सुन(कर) ही कोई का माथा चकित हो जावेगा। शिव की फिर जीवन कहानी कैसे सुनावेंगे?तो मनुष्य वंडरफुल बात समझ बहुत आवेंगे। बोलो, इस निमंत्रण पर जो आवेंगे उन्हों को हम निराकार परमपिता परमात्मा शिव की जीवन कहानी बतावेंगे। गांधी आदि की भी बायोग्राफी सुनते हैं ना। अभी तुम महिमा करेंगे शिव की तो मनुष्यों की बुद्धि से सर्वव्यापी की बातें उड़ जावेंगी। एक की महिमा फिर दूसरे से मिल न सके। यह तो ....बनाते हैं वा प्रदर्शनी करते हैं वह कोई शिव का मंदिर तो है नहीं। तुम तो जानते हो सच्चा2 शिव का मंदिर यह है। जहां रचता खुद रचना के आदि,मध्य,अंत का राज समझाते हैं। तुम लिख सकते हो रचता की जीवन कहानी और रचना के आदि,मध्य,अंत का नालेज अथवा हिस्ट्री ....सुनावेंगे। हिंदी–अंग्रेजी लिखते हो। बड़े2 पास जावेंगे तो वंडर खावेंगे यह कौन है जो परमपिता परमात्मा की बायोग्राफी बताते हैं। सिर्फ रचना के लिए कहेंगे तो समझेंगे प्रलय हुई। फिर नई दुनिया रची ; परंतु नहीं। तुमको तो समझाना बाप पतितों को आकर पावन बनाते हैं। सर्व पतितों को पावन बना रहे हैं। तो मनुष्य वंडर खावे। शिव के मंदिर में तो बहुत आवेंगे। हॉल वा मंडप बड़ा होना चाहिए। भल तुम प्रभातफेरी निकालते हो। .....में भी इन ल.ना. को राज्य कौन देते हैं वह समझाना है। निराकार शिवबाबा जो सभी आत्माओं का परमपिता है बाप है उनकी हम जीवन कहानी बताते है।। वही आकर राजयोग सिखलाते हैं। ऐसे2 विचार–सागर–मंथन करना चाहिए। कैसे शिव के मंदिर में जाकर सर्विस करें। शिव के मंदिर में सवेरे जाकर पूजा आदि करते हैं। घंटी आदि भी सवेरे बजती होगी। शिवबाबा भी प्रभात के समय आते हैं ना। उस समय तो नहीं सुनाय सकेंगे। सभी मनुष्य सो (जाते) होंगे। रात (को) फिर भी मनुष्यों को फुर्सत रहती है। बत्तियां आदि भी मिलती हैं। रोशनी भी अच्छी करनी चाहिए। शिवबाबा आकर आत्माओं को जगाते हैं ना। सच्ची2 दीपमाला तो यह है। हरेक के घर का दीपक जगता है। आत्माओं की ज्योत जगती है। वह तो ....में दीवा जलाते हैं। वह कोई दीपक नहीं है। दीपावली ....वास्तव में अर्थ ही यह है। कोई2 का दीपक बिल्कुल जगता ही नहीं है। तुम जानते हो हमारा दीपक कैसे जगता है। दीपमाला भी तुमको इससे सिद्ध करनी है। सबका दीपक जग जाता है। कोई मरता है तो दीवा जलाते हैं कि अंधियारा है ;परंतु पहले तो आत्मा का दीपक जगे तब अंधियारा न हो.....। मनुष्य घोर अंधियारे में ही हैं। आत्मा तो एक सेकेंड में एक शरीर छोड़ दूसरे में चली जाती है। अंधियारा.....की इसमें बात ही नहीं। यह भक्ति मार्ग की रसम है। ....घृत खलास होने दीवा बुझ जाती है। अंधियारा का भी अर्थ कुछ नहीं समझते हैं। आगे आत्माओं को बुलाते थे। कुछ पूछते थे। अभी इतना नहीं चलता है। यहां भी आते हैं। कोई2 समय कुछ थोड़ा बोल देते हैं। बोलो ,तुम सुखी हो? तो कहेंगे, हां। सो तो जरूर यहां (से) जो जावेगा अच्छे घर में ही जन्म लेंगे। जन्म तो जरूर अज्ञानी के ही घर में लेंगे ना। ज्ञानी के घर में तो जन्म (ले न) सके ; क्योंकि ज्ञानी ब्राह्मण तो विकार में जा न सके। वह तो पवित्र है ना। बाकी हां, अच्छे सुखी घर में जन्म लेंगे। विवेक भी कहते हैं जैसी अवस्था वैसा जन्म। फिर वहां अपना जलवा दिखाते हैं। भल शरीर छोटा है इसलिए बोल न सके। थोड़ा भी बड़ा होने से ज्ञान का जलवा दिखावेंगे जरूर। जैसे कोई2 शास्त्रों के संस्कार

ले जाते हैं तो छोटेपन में ही फिर उसमें लग जाते हैं। यहां से भी नालेज ले जाते हैं तो जरूर महिमा निकालेंगे। अभी शिवजयंती तो है सोमवार को। वह तो है अज्ञानी मनुष्यों का मनाना करना। अभी तुम 32वीं शिवजयंती मनाते हो। वह लोग कुछ समझते नहीं हैं। पूछना चाहिए अगर सर्वव्यापी है तो जयंती कैसे मनावेंगे? अभी तुम बच्चे पढ़ रहे हो। तुम जानते हो वह बाप भी है, टीचर भी है ,गुरू भी है। बाबा ने समझाया था सिक्ख लोग भी कहते हैं सतगुरू अकाल। अब वास्तव में अकालमूर्त तो सभी आत्माएं हैं ; परंतु एक शरीर छोड़ दूसरा लेती हैं। इसलिए जन्म–मरण कहा जाता है। आत्मा तो वही है। आत्मा 84जन्म लेती है। शिवबाबा का तो ऐसे नहीं होता है। उनकी शिवजयंती मनाते हैं तो पूछना चाहिए ना। अभी तो टू लेट है। मुरली पहुंच न सकेगी। जयंती पर समझावेंगे तो जरूर कैसे और कब जन्म लेते हैं। कल्प जब पूरा होता है तो खुद ही आकर बतलाते हैं कि मैं कौन हूं। मैंने कैसे इनमें प्रवेश किया है जिससे तुम आपे ही समझ जाते हो। पहले नहीं समझते थे। हां, परमात्मा की प्रवेशता है। बाकी कैसे ,कब हुई कुछ भी समझते थोड़े ही थे। दिनप्रतिदिन तुम्हारी समझ में आती रहती है। नई2 बातें सुनते रहते हैं। आगे थोड़े ही दो बाप का राज समझाते थे। आगे तो तुम जैसे कि बेबियां थे। अभी भी बहुत बच्चे कहते हैं बाबा हम आपका दो दिन का बच्चा हूं। इतने दिन का बच्चा हूं। समझते हैं जो कुछ होता है कल्प पहले मिसल। इसमें बड़ी नालेज है। समझने में टाइम लगता है। जन्म ले फिर मर भी पड़ते हैं। दो मास,आठ मास के बाद भी मर जाते हैं। बाप का बनकर फिर विकार में गिरते हैं तो मर जाते हैं। तुम्हारे पास आते हैं कहते भी हैं बरोबर राइट है। वह हमारा बाप है ,हम उनके सन्तान हैं। हां2 कहते हैं। बच्चे लिखते भी हैं बहुत प्रभावित हो जाते हैं। बाहर गया ,खलास। मर पड़ा। फिर आते नहीं तो क्या होगा?....तो पिछाड़ी में जाकर रिफ्रेश होंगे या तो फिर प्रजा में आ जावेंगे। यह सब बातें समझने की हैं। हम शिवजयंती कैसे मनाते हैं। शिवबाबा कैसे सदगति करते हैं। शिवबाबा स्वर्ग ..... समझते हो वह (ज्ञा)न का सागर है। .....खुद कहते हैं मैं तुमको राजयोग सिखाता हूं। विश्व का मालिक बनता (बनाता) हूं। बाप तो है ही हैविना का रचता। तो.....हैविन का ही मालिक बनावेंगे ना। हम उनको बायोग्राफी बताते हैं। कैसे स्वर्ग की स्थापना करते हैं। कैसे राजयोग सिखाते हैं, आकर समझो। जैसे बाप समझाते हैं वैसे बच्चे नहीं समझा सकते हैं। इसमें बहुत अच्छा समझाने वाला चाहिए। शिव के मंदिर में बहुत अच्छा मनाते होंगे तो वहां बैठ समझाना चाहिए। ल0ना0 के मंदिर में शिव की जीवन कहानी बैठ सुनावेंगे तो किसको जंचेंगे नहीं। खयाल में नहीं आवेगा। फिर उन्हों को अच्छी रीत बुद्धि में बिठाना पड़े। ल0ना0 के मंदिर में भी बहुत आते हैं। उन्हों को ल0ना0 वा राधे–कृष्ण का समझाय सकते हैं। इनका अलग मंदिर तो होना नहीं चाहिए। कृष्ण जयंती पर कृष्ण के मंदिर में जाकर मनावेंगे। हम उनकी 84जन्मों की जीवन कहानी सुनाते हैं। कृष्ण ही गोरा अथवा सांवरा क्यों गाया जाता। कहते भी हैं गांवरे का छोरा। गांवरे में तो गइयां और बकरियां ही चराते होंगे। बकरियों का तो दूध ..... .पीया है इसने तो बकरी चराई होगी। बाबा अगर सिंध में जाये तो वह जगह भी बता सकता हूं। .....में हम रहते थे। उनका बच्चा अभी एम0पी0 है। फील करता हूं हम गांवरे का छोरा था। बरोबर .....न जूती थी। दौड़ते–भागते रहते थे। 10/11 आने मन अनाज बेचते थे। अभी स्मृति आई है। हम .....बाप ने आकर प्रवेश किया है। तो यह बाप का लक्ष्य सबको मिले तो शिवबाबा को याद करे। वही सर्व का सदगति दाता .....। तुम रामचंद्र की भी जीवन कहानी बता सकते हो। कब से इनका राज्य शुरू हुआ। कितना कितना वर्ष हुआ। ऐसी2 खयालात आनी चाहिए। शिव के मंदिर में शिव की बायोग्राफी सुनानी पड़े। राम के मंदिर में राम की महिमा करनी पड़े। कैसे रामराज्य पाया। कब पाया। तुम अभी पुरुषार्थ कर रहे हो देवी–देवता पद पाने। देवी–देवता धर्म की स्थापना करते हो। आदि सनातन देवी देवता धर्म हमारा है। हिंदू अक्षर न कहा तो भी कोई गुस्सा नहीं करेंगे।

बेलो हम पुजारी ही देवताओं के थे। तो इसी धर्म के ठहरे ना। जरूर भूल गए हैं कि हमारा आदि सनातन देवी–देवता धर्म है। तुम किसको भी कह सकत हो हम आदि सनातन देवी–देवता धर्म के हैं और पवित्र हैं। कोई भी कुछ कह न सके। हिंदू धर्म कोई ने तो स्थापन नहीं किया है ना। बाकी हिंदू कोई धर्म है नहीं। ऐसा सीधा कहने से बिगर पड़ते हैं। समझते हैं यह (कोई साईं) आदि है। बोलो हम आदि सनातन देवी–देवता धर्म के हैं। जिसको आजकल हिंदू कह दिया है। हम पूजते देवताओं को हैं ,महिमा भी देवताओं की करते हैं। शिव ने ही आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना की है। तो उनकी महिमा क्यों नहीं करेंगे?ऐसी बातें दिल में धारण करते रहो। मंदिर में जाय तुम समझाय सकते हो। हम देवताओं की महिमा करते हैं। हम सभी जीवन कहानी बता सकते हैं। राम की भी बता सकते हैं। देहधारी तो पुनर्जन्म जरूर लेते हैं। बाप का पूरा परिचय देना तो फिर सर्वव्यापी का ज्ञान बुद्धि से निकल जाये। नाम–रूप से न्यारी कोई चीज होती नहीं। आकाश इतना .... तभी भी उसका नाम है। आत्मा इतनी छोटी बिंदी है उसका भी तो नाम कहा जाता है ना। आत्मा इस शरीर के आधार से ही पार्ट बजाती है। यह एक ही शिवबाबा है जो पुनर्जन्म में नहीं आते हैं। बाकी देहधारी तो पुनर्जन्म में आते हैं। ऐसे2 बैठ शिव की जीवन कहानी बतानी चाहिए। फिर श्रीकृष्ण की जीवन कहानी। बाकी शास्त्रों में तो बहुत दंतकथायें हैं। जो सुनते–सुनाते ,पढ़ते ही आते हैं। मुक्ति–जीवनमुक्ति की कोई भी ठौर पा न सके। तुम्हारी बुद्धि में यह सारी नालेज है। सीढ़ी चढ़ते हैं फिर उतरते हैं। कोई तो अपने पुरुषार्थ से समझ सकते हैं। हम पीछे आवेंगे। या तो पढ़े हुए आगे ढोवेंगे। सूिल सेवा भी बहुत की होगी तो पहले आवेंगे। बहुत ही प्यार से यज्ञ की हड्डी सर्विस करते हैं तो फल भी अच्छा मिलेगा। धमचक्कर मचाने वाले को उंच पद मिल न सके। कोई2 नौकर भी धणी को बड़ा तंग करते हैं। कोई तो ऐसा सुख देते हैं जो बच्चा भी दे न सके। .....यह भी बच्चे जानते हैं दिन प्रतिदिन गुह्य2 प्वाइंट्स मिलती रहती है। .....इसलिए वह नोट भी करनी चाहिए। मुरली में भी तन्त अच्छी2 प्वाइंट निकलेगी तो उस पर ध्यान जास्ती जावेगा। बाबा को तो पुरानी प्वाइंट्स मिक्स कर सुनानी पड़ती है ;क्योंकि कब नये भी आ जाते हैं। नई2 अच्छी प्वाइंट नोट करनी चाहिए। प्वाइंट ऐसे2 हैं जो कोई एक प्वाइंट से भी किसका दिमाग खुल जाये। पढ़ाई का भी हुनर होता है ना। तुम सब टीचर्स हो। यह भी समझाने फिर भी बाप का फरमान है मामेकम् याद करो। स्वदर्शन चक्र तो फिराते रहना है। यह चक्र फिराना ही मनमनाभव है। स्वदर्शन चक्र फिराते हो तब ही तुम्हारे विकर्म विनाश हो(ते) हैं। श्रीकृष्ण ने भी अगले जन्म में यह स्वदर्शन चक्र फिराया है तब ही यह पद पाया है। बाकी चक्र से कोई मारने आदि की कोई बात नहीं। तो सारा दिन तुम्हारी बुद्धि यही चलती रहे। तुम्हारा जाने का पार्ट तो वह है ना। मुसाफिरी पूरी कर फिर वहां जाकर विश्राम पाते हो। वह है विश्रामपुरी शांतिधाम। विश्रामपुरी घर को कहा जाता है। नींद भी मनुष्य घर में करते हैं ना। तुम वहां नींद अच्छी रीत करते हो। शरीर ही नहीं। रात को भी आत्मा शरीर से न्यारी हो जाती है। इसको ही नींद कहा जाता है। तुम बच्चों को अभी .....बनना है। प्रैक्टिस करते2 अशरीरी बन जावेंगे। जैसे भक्तिमार्ग में भक्ति करते2 एकदम लीन हो जाते.....ही देखते रहते हैं। इसमें यह सारी दुनियां भूल जानी है। यह है बेहद का सन्यास। हमको तो अपने घर जाना है। यह कुछ भी रहेगा नहीं। यहां से नफरत हो जाती है। साहुकारों को तो बड़ा लव रहता है पैसे में। वही याद रहता है। ..... जितना कम उतना अच्छा। बाप और भाई–बहिन। कितना छोटा सम्बंध है। जब रचना रचते हैं तो बच्चे .....बच्चे हैं। फिर प्रजापिता ब्रह्मा के मुखवंशावली द्वारा ब्राह्मण रचते हैं तो भाई–बहिन। क्रिमिनल आई हो न सके। दृष्टि न जाये इसके लिए युक्ति समझाई है। भाई समझने फिर कोई भी विकर्म नहीं होगा। भाई–बहिन का भी सम्बंध निकल जाये। भाई–भाई का ही सम्बंध रहे। वह अवस्था चाहिए बच्चों की। अच्छा, मीठे2 रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बापदादा का यादप्यार गुडमार्निंग। बच्चों को नमस्ते।